ISSN-2582-144X

कहर कोरोना का...

कृषि मंजूषा का अप्रैल 2020 अंक (वर्ष 02 अंक 02) आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति नहीं हो पा रही है, बल्कि मन असीम पीड़ा से व्यथित है। पीड़ा का कारण देश में हुई असामयिक वर्षा व उससे होने वाली फसल को क्षति एवं वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से लाखों लोगों का काल का ग्रास बन जाना है। मार्च के प्रथम पखवाड़े में, होली के शुभ अवसर पर, बेमौसम वर्षापात एवं ओलावृष्टि रबी मौसम की पकती हुई फसल पर वज्रपात साबित हुई एवम् खेती-किसानी के लिए आफतों की सौगात लेकर आई, ज्ञात रहे कि इस वर्ष जहाँ खरीफ फसल की बुवाई के दौरान सूखे ने परेशानी में डाला था, वहीं इस बेमौसम बरसात ने किसानों को बुरी तरह तबाह कर दिया। वैसे तो यह विपत्ति पूरे देश पर पड़ी थी, परंतु इसका सबसे ज्यादा प्रभाव उत्तर और मध्य व पश्चिमी राज्यों दिखाई दिया। बेमौसम वर्षापात से प्रायः सभी फसलों को क्षति पहुची है परंतु दलहन, तिलहन एवम सब्जी फसलें, खास तौर पर प्रभावित हुई है। विलंब से बोई गई सरसों की फसल मे माहू लगने से चौपट होने की आशंका बनी गयी। निचले खेतों में पानी भरने से आलू के साथ ही मूली, गोभी, टमाटर व बैंगन की फसलों को भी नुकसान पहुँचा है। आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई है। फलदार वृक्षों विशेषकर आम, लीची, पपीता, केला समेत प्रायः सभी फल फसलों को भी भारी नुकसान हुआ है। दूसरा कारण विषाणु जनित वैश्विक महामारी 'कोरोना' है जिसकी चपेट मे पूरा विश्व हैरान परेशान है, जिसका आगाज चीन के वुहान शहर से हुआ। अमेरिका आज इससे सबसे ज्यादा प्रभावित है। यूरोपीय देशों में इस विषाणु ने ज्यादा ही ताण्डव मचा रखा है। काल चक्र है, इस प्रकार का कठिन समय सदी मे एकाध बार ही दस्तक देता है, विगत सदियों में भी यह त्रासदी झेली गयी है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि हर बार यह तीसरे दशक के प्रारंभ में ही आया है जैसे कि 1620 (लेप्टोस्पाइरोसिस), 1720 (प्लेग), 1820 (पीला ज्वर) एवम 1920 (स्पेनिश फ्लू यानि संक्रामक जुकाम) और अब 2020 में। यह समय भी व्यतीत हो जायेगा। परंतु हमें इस समय धैर्य से काम लेना चाहिये। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' मे क्या सटीक लिखा हैं कि 'धीरज धर्म मित्र अरू नारी आपद काल परखिये चारी' अर्थात संकटकाल में ही इंसान के स्वयं के धैर्य व धर्म के साथ-साथ उसके अपने इष्ट मित्रों के सहयोग एवं जीवनसाथी की दृढ़ता व समर्पण की भी परीक्षा होती है।

नैतिक जिम्मेदारी के कारण ही अप्रैल 2020 (वर्ष 02 अंक 02) को सीमित संसाधनों में कुछ बिलम्ब से ही सही किंतु प्रकाशित किया जा रहा है। विगत मे प्रकाशित 'आवरण कथा' को गुणी एवम स्नेही पाठकों ने काफी ज्ञानवर्धक एवम् रुचिकर बताया है। पाठकों का प्यार 'कृषि मंजूषा ' पत्रिका के आवरण कथा को निरंतर एवम् आबाध रूप से बना ही नहीं हुआ है अपितु इसमें लगातार वृद्धि भी हो रही है। आपके स्नेह एवम् आशीर्वाद से आवरण कथा पात्रिका की स्थायी एवम् सशक्त स्तंभ के रूप स्थापित होने मे सफल रही है। यह अंक ' जैविक कृषि' पर आधारित है, अतः हमेशा कि तरह इस अंक में 'भारतीय परिदृश्य में जैविक कृषि की दशा एवम् दिशा' पर आवरण कथा प्रकाशित किया जा रहा है। अन्य लेखों में जैविक कृषि मॉडल, केंचुआ खाद, जैविक भंडारण, जैविक कालानमक चावल का उत्पादन, मीठी मक्की की कश्मीर में खेती, स्वयम् सहायता समूह सहित अन्य ज्ञानवर्धक लेखों को स्थान दिया गया है। स्थानाभाव के कारण अन्य रचनाओं को अगले अंकों में प्रकशित करेंगे।

अगला अंक अक्टूबर 2020 (वर्ष 03 अंक 01) होगा, इस अंक से हम लेखकों से अनुरोध करेगें कि यदि वे अपने लेख में तालिका, चित्र या कोई आदि समाग्री का उपयोग करते हैं, तो कृपया श्रोत को भी लिखने का कष्ट करें, इससे न केवल लेख की विश्वसनीयता बढ़ेगी, अपितु लोकप्रियता मे भी चार चाँद लग जायेंगे। साथ ही साथ, लेख के अंत मे 'संदर्भ' मे पूरा विवरण भी देने का कष्ट करें, जिससे लेख मे सम्पूर्णता आयेगी। वस्तुतः यह एक तरीके से हिंदी में शोध पत्र या समीक्षा पत्र की तरह ही लिखा जायेगा, जिससे इसे शोध पत्र या समीक्षा पत्र की श्रेणी में रखा जा सकेगा। आप सभी रचनाकारों से सादर अनुरोध है कि यह पत्रिका आपकी है, इसकी गुणवत्ता भी आपके हाथ में है। इस पत्रिका में ज्ञानवर्धक लेख प्रेषित कर कृषक समाज व कृषि कार्यों से जुड़े लोगों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में अपनी अहम् भूमिका का अहसास करें और ज्ञान के विस्तार में योगदान दें। अंत में डा. आशुतोष उपाध्याय जी कि कविता के साथ अपनी बात यही समाप्त करता हूँ। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वाश है कि आपका स्नेह 'कृषि मंजूषा' पत्रिका पर सदैव बना रहेगा।

असामयिक वर्षा से कई जगह, रबी फसलों को नुकसान हुआ है
कोरोना वायरस भी सम्पूर्ण विश्व में, काल का ग्रास बना हुआ है
ऐसे में सन्देश यही है, संयम व दूरी रखकर धीरज को न खोना
करें 'कृषि मंजूषा' का अवलोकन, जो समृद्धि को बना हुआ है

(अनिल कुमार सिंह)
प्रधान संपादक